कुमार जीवन - 66

अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ **कुमारों से:-** (1) कुमारों की विशेषता क्या है? कुमार जीवन श्रेष्ठ जीवन है क्योंकि पवित्र जीवन है। और **जहाँ पवित्रता है, वहाँ महानता है।** कुमार अर्थात् शक्तिशाली, जो संकल्प करें वह कर सकते हैं। कुमार अर्थात् सदा बन्धनमुक्त बनने और बनाने वाले। ऐसी विशेषतायें हैं ना? जो संकल्प करो वही कर्म में ला सकते हो।

➳ _ ➳ स्वयं भी पवित्र रह औरों को भी पवित्र रहने का महत्व बता सकते हो। ऐसी सेवा के निमित्त बन सकते हो। **जो दुनिया वाले असम्भव समझते हो वह ब्रह्माकुमार चैलेन्ज करते हैं - तो हमारे जैसा पावन कोई हो नहीं सकता, क्यों? क्योंकि बनाने वाला सर्वशक्तिमान है।** दुनिया वाले कितना भी प्रयत्न करते हैं लेकिन आप जैसे पावन बन नहीं सकते। **आप सहज ही पावन बन गये।** सहज लगता है ना? या दुनिया वाले जैसे कहते हैं - यह अननैचुरल है, ऐसे लगता है? कुमारों की परिभाषा ही है - **"चैलेन्ज करने वाले, परिवर्तन कर दिखाने वाले, असम्भव को सम्भव करने वाले"।**

➳ _ ➳ **दुनिया वाले अपने साथियों को संग के दोष में ले जाते हैं और बाप के संग में ले आते हो। उन्हें अपना संग नहीं लगाते, बाप के संग का रंग लगाते हो, बाप समान बनाते हो। ऐसे हो ना?** (30-01-1988)

➢➢ दुनिया जिसे अननेचुरल कहती है, उसे हम नेचुरल कहते हैं... क्योंकि

➳ _ ➳ यह हमारा आदि, अनादी, मूल संस्कार है

➳ _ ➳ पवित्रता हमारा स्वधर्म है

➳ _ ➳ भगवान ने हमें स्मृति दिलाई है

→ इसलिए पवित्रता धारण करना अति सहज हो गया है

➳ _ ➳ भगवान ने पैदा करते ही वरदान दिया है

→ "योगी भव , पवित्र भव"

➳ _ ➳ हमारे पांचो स्वरूपों का आधार पवित्रता है

➳ _ ➳ पवित्रता के आधार पर परमात्म प्रेम में डूबकर सम्पूरण संतुष्टता का अनुभव हम करते हैं

→ आत्मा अनंत है

- और उसकी तृप्ति अनंत (परमात्मा) से ही हो सकती है
  - दो देहधारी कभी एक दुसरे को तृप्त कर ही नहीं सकते

➳ _ ➳ ब्रह्मचर्य को संकल्प शक्ति से अति सहज विधि से धारण किया जा सकता है

➢➢ संसार पवित्रता को अननेचुरल कहता है क्योंकि

➳ _ ➳ विकार परम्परा से चालु है

➳ _ ➳ उन्हें सतयुग, त्रेतायुग का कोई ज्ञान नहीं है

➳ _ ➳ उन्हें परमधाम का कोई ज्ञान नहीं है

➳ _ ➳ उन्हें परमात्मा का कोई परिचय नहीं है